चाहिए। ...(**व्यवधान**)... कृपया मुझे सुन लीजिए। Just a minute, please. जब हमारा और श्री लालू प्रसाद जी का गठबंधन होता है, तो श्री गिरिराज जी आपको परेशानी होती है। जब आपका और पी.डी.पी. का गठबंधन होता है, तो किसी को कोई परेशानी नहीं होती। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः ओ.के. प्लीज अब आप समाप्त कीजिए।

श्री के.सी. त्यागीः सर, मैं समाप्त कर रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः त्यागी जी, अब आप कृपया कनक्लूड कीजिए।

श्री के.सी. त्यागीः सर, मेरा एक अंतिम बिन्दु है, जिसके बारे में बोलकर मैं अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

सर, विदेश नीति कोई कांग्रेस की बपौती नहीं थी, बल्कि यह आजादी के आंदोलन से निकली हुई धारा थी। आपने एक महीने में कितनी दुनिया बदल दी। जापान और चीन का झगड़ा है। अपना झगड़ा सुलझाने में वे दोनों देश सक्षम हैं, लेकिन आप जाइंट कम्युनिक जारी करते हैं कि हम वहां भी दखल देंगे, जिसके कारण आपके चीन से रातोंरात रिश्ते खराब हो गए। आप यलो सी रिवर में जाने वाले कौन हो, आप कौन हो, मलैका के इलाके में जाकर अमरीका का व्यापार कराने वाले, लेकिन आपने जाइंट कम्युनिक में जिक्र कर दिया कि आई.एस. का जो खतरा है, उस पर सूचनाएं भी शेयर करेंगे, बल्कि यदि आवश्यकता हुई, तो भारतीय सेना खाड़ी के मुल्क में इजरायल और अमरीका, दोनों के साथ जाकर लड़ेगी, Which is against the basic interest of the nation.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now, please conclude.

श्री के. सी. त्यागी : सर, रूस हमारा दोस्त है। हर संकट में काम आया। जब ओबामा साहब यहां पर थे, तो उन्होंने यूक्रेन की नीति को लेकर रूस की आलोचना की। हम अपनी जमीन को रूस के खिलाफ इस्तेमाल होने दे रहे हैं, जैसे कि उनके सैन्य संगठन, नाटो के हम मैम्बर हैं। सर, हमारी विदेश नीति की नींव रखी गई है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : ठीक है। ठीक है। हो गया। अब आप बैठिए। आपने ज्यादा टाइम ले लिया।

श्री के.सी. त्यागीः सर, आगे की बात यह है कि ...(**व्यवधान**)... आप गरीब और अमीर के एक साथ हमदर्द नहीं हो सकते। यह शहर के लोगों और कॉरपोरेट सैक्टर के लोगों की सरकार है। ...(**व्यवधान**)...और मैं इसका विरोध करता हूं।

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS) 2014-15

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now, I am allowing Shri Suresh Prabhu to lay the papers showing the Supplementary Demands for Grants on the Table of the House.

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI SURESH PRABHU): Sir, I beg to lay on the Table, a statement (in English and Hindi) showing the Supplementary Demands for Grants (Railways), for the year 2014-15.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS-*Contd.*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you very much. Now, Shri Md. Nadimul Haque. You have to adhere to the time. You have to finish it in eight minutes.

श्री मो. नदीमुल हक (पश्चिमी बंगाल)ः डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि आपने सदर-ए-जम्हूरिया के थैंक्स मोशन पर बोलने का मुझे मौका दिया। मैंने काफी मैम्बरों की बातें सुनीं, लिहाज़ा मैं अपनी बात, जैसा आपने कहा, मुख्तसर और जामे रखूंगा।

सर, नई सरकार को तकरीबन नौ महीने हो गए हैं और हम सब जानते हैं कि नौ महीनों में बहुत सारी उम्मीदें पूरी हो जाती हैं।

"हमने सोचा था कि बरसात में बरसेगी शराब।
आई बरसात, तो बरसात ने दिल तोड़ दिया।"

मैं शुरू में ही यह पूछना चाहता हूं कि क्या हुआ तेरा वादा? मैं यह सवाल उठाना चाहता हूं कि सरकार के वादों और एक्शन में इतना फर्क क्यों है? यह फर्क किसी एक मामले तक महदूद नहीं, बल्कि हर सूबे में नज़र आता है। अब मनरेगा को ही ले लीजिए। इस गारंटी स्कीम से गारंटी शायद अब गायब हो गई है, जबकि सोशल सेक्टर और पब्लिक वर्क प्रोग्राम्स में इसका शुमार दुनिया की बड़ी स्कीमों में होता है। वर्ल्ड बैंक ने भी इसको देही तरक्की की एक मिसाली स्कीम का दर्जा दिया है, लेकिन मौजूदा सरकार ने क्या किया? सरकार ने इस स्कीम के तहत ब्लॉक्स की शरह घटा दी है और मज़दूर और सामान के रेशियो में भी तरमीम की है। क्या बेहतर नहीं होता कि यह सब करने के बजाय अगर सरकार रियासतों और ग्राम पंचायतों की मदद करती ताकि मनरेगा के ज़रिए प्रोडक्टिव ऐसेट्स तैयार किए जा सकते? यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रेज़िडेंशियल सेक्टर में सोशल सेक्टर को नज़रअंदाज़ किया गया है। जहां हेल्थ बजट में 6000 करोड़ रुपए की कटौती की गई, वहीं डिफेंस बजट में 13,000 करोड़ रुपए की कमी आई है। हद तो यह है कि पिछले नौ महीनों में पेट्रोल और डीज़ल पर लगी एक्साइज़ ड्यूटी में चार मर्तबा इज़ाफा हुआ है।

डिप्टी चेयरमैन साहब, यह सारा हाउस जानता है कि जिस दिन बजट पेश किया गया, उसी रात तेल की कीमतों में फिर इज़ाफा किया गया। खास ध्यान में रखने की बात यह है कि एग्रीकल्चर ग्रोथ अब नेगेटिव हो गई है।

"चमन में फसले बहार आई और गुज़र भी गई
मैं फिक्र ही में रहा आशियां बनाने की।"